एम.ए. उत्तरार्द्ध संस्कृत परीक्षा 2009–2010

"वर्ग अ : साहित्यशास्त्र"

चतुर्थ प्रश्नपत्र : काव्य (गद्य एवं पद्य)

100 अंक

पाठ्यक्रम –

1. कादम्बरी (कथामुख) – बाण
2. नैषधीयचरित (तृतीय सर्ग) – श्री हर्ष
3. विक्रमाङ्कदेवचरित (प्रथम सर्ग) – बिल्हण
4. कुमारसंभव (प्रथम सर्ग) – कालिदास
5. संस्कृत गद्य–पद्य–साहित्य–सर्वेक्षण

समस्त पाठ्यक्रम तीन खण्डों तथा पांच इकाइयों में विभाजित किया गया है। इसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है।

पाठ्यक्रम का विस्तृत विवरण –

प्रथम खण्ड (वस्तुनिष्ठात्मक भाग) – 10 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत विकल्परहित वस्तुनिष्ठ कुल दस प्रश्न पूछे जायेंगे। ये प्रश्न समस्त पाठ्यक्रम पर आधारित होंगे तथा समस्त इकाइयों से समान रूप से सम्बद्ध होंगे।

पाठ्यक्रम की इकाइयाँ –

प्रथम इकाई – कादम्बरी (कथामुखपर्यन्त)

द्वितीय इकाई – नैषधीयचरित (तृतीय सर्ग मात्र)

तृतीय इकाई – विक्रमाङ्कदेवचरित (प्रथम सर्ग मात्र)

चतुर्थ इकाई – कुमारसंभव (प्रथम, द्वितीय सर्ग–पर्यन्त)

पंचम इकाई – संस्कृत गद्य–पद्य–साहित्य का सर्वेक्षण

द्वितीय खण्ड (व्याख्यात्मक भाग) 50 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत कुल पांच प्रश्न (व्याख्याएं) शत–प्रतिशत विकल्पों के साथ पूछे जायेंगे। इनमें से प्रत्येक का उत्तर (व्याख्या) लगभग 250 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिये 10 अंक निर्धारित हैं। इनका पाठ्यक्रम के अनुसार विभाजन निम्न प्रकार से किया गया है –

(क) कादम्बरी (कथामुख भाग) से किसी एक अवतरण की सप्रसंग व्याख्या विकल्प सहित पूछी जायेगी। 10 अंक

(ख) नैषधीयचरित (तृतीय सर्ग) से एक श्लोक की विकल्पपूर्वक संस्कृत भाषा में व्याख्या पूछी जायेगी। 10 अंक

(ग) विक्रमाङ्कदेवचरित (प्रथम सर्ग) से एक श्लोक की विकल्पपूर्वक सप्रसंग सटिप्पणी व्याख्या पूछी जायेगी। 10 अंक

(घ) कुमार संभव (प्रथमसर्ग) से किसी एक श्लोक की विकल्प देकर सप्रसंग व्याख्या पूछी जायेगी। 10 अंक

(ड) संस्कृत–गद्य एवं पद्य साहित्य से किसी एक कवि या कृति पर सामान्य परिचयात्मक लेख लिखने के लिये कहा जायेगा। 10 अंक

तृतीय खण्ड (निबन्धात्मक भाग) 40 अंक

इस खण्ड के अन्तर्गत कुल दो प्रश्न (विकल्पों के साथ) पूछे जायेंगे। इनमें से प्रत्येक का उत्तर लगभग 400 शब्दों में देना होगा। इनके लिये 20 + 20 अंक निर्धारित है।

उक्त खण्ड के प्रथम प्रश्न के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु आधारस्वरूप होंगे – 20 अंक

(1) बाण भट्ट की भाषा शैली, बाण भट्ट का बैदुष्य, महत्व तथा गद्य–लेखकों में उनका स्थान, उनके गद्य की विशेषताएं आदि। नैषधीयचरित का संस्कृत महाकाव्यों में स्थान, श्री हर्ष के कृतित्व का मूल्यांकन आदि।

(2) उक्त खण्ड के द्वितीय प्रश्न के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु आधारस्वरूप होंगे – 20 अंक

विक्रमांकदेवचरित की काव्यात्मक विशेषताएं, विक्रमांक की समीक्षा, बिल्हण की प्रतिभा आदि का मूल्यांकन, कालिदास के काव्य की विशेषताएं, संस्कृत महाकाव्यों में उनका स्थान, कुमारसंभव में कवित्व, प्रकृतिचित्रण, संस्कृत साहित्य की प्रमुख कृतियों का समीक्षात्मक विवेचन।

सहायक पुस्तकें :–

1. काद्म्बरी – एक सांस्कृतिक अनुशीलन–वासुदेव शरण अग्रवाल
2. बाणभट्ट का साहित्यिक अनुशीलन–अमरनाथ पांडेय
3. बाणजयन्तिनिबन्धावली – सम्पा. डा. श्रीधर वासुदेव सोहनी
4. बाण–आर.डी. कर्मारकर
5. बाणभट्ट–ए लिटरेरी स्टडी–डा. नीता शर्मा
6. नैषधपरिशीलन–चण्डिकाप्रसाद शुक्ल
7. विक्रमांकदेवचरित का साहित्यिक सर्वेक्षण–डा. प्रियतमचन्द्र
8. संस्कृत साहित्य का इतिहास – कीथ, अनु. मंगलदेव शास्त्री
9. ए हिस्ट्री ऑफ क्लासिकल संस्कृत लिट्रेचर–दे एवं दासगुप्ता
10. संस्कृतसाहित्य का इतिहास – बलदेव उपाध्याय
11. संस्कृतवाङ्गय का विवेचनात्मक इतिहास – डा. सूर्यकान्त
12. संस्कृत महाकाव्य की परम्परा – डा. केशव मूलगांवकर
13. संस्कृतकविदर्शन – डा. भोलाशंकर व्यास
14. A Literary Study of the Naishadhiya Charita. of Shriharasha – A.N. Jani
15. Historical Mahakavyas in Sanskrit – Chandra Prabha